Date 24/4/2020

BA Part-1 (4) Sec. Sociology —

From - Dr Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College

इस्लाम का भारतीय समाज व संस्कृति पर प्रभाव —

1 स्त्रियों की स्थिति मे गिरावट - मुसलमानो के प्रभाव के फलस्वरूप हिन्दु स्त्रियो की दशा मे गिरावट आती गई मुसलमान हिन्दु कन्याओ का अपहरण और उनसे बलात विवाह करते थे। अत: स्त्रियो की स्वतन्त्रता समाप्त कर दी गई और उन्हे घर की चारदीवारी मे बंद रहने के लिए बाध्य कर दिया गया।

2 - जाति व्यवस्था का कठोर होना — मुसलमानो से अपना धर्म तथा समाज की रक्षा के उद्देश्य से हिन्दुओ ने जाति प्रथा के बन्धनो को कठोर बना दिया। नियमो का उल्लंघन करने वाले को जाति से निष्कासित कर दिया जाता था।

बाल विवाह - मुसलमानो द्वारा अपहरण के भय से हिन्दु लोग अपनी कन्याओ का विवाह बाल अवस्था मे ही कर देते थे भारतीय समाज मे बाल विवाह का प्रचलन इस्लाम के प्रभाव की ही देन है।

पर्दा प्रथा — भारतीय समाज मे पर्दा प्रथा का भी इस्लामी सभ्यता की देन माना जाता है।

बहु विवाह इस्लाम के प्रभाव के कारण बहु विवाह प्रथा का भी प्रोत्साहन मिला

सती प्रथा तथा जौहर प्रथा — मुसलमानो के आगमन के पश्चात सती प्रथा का प्रचलन बढ़ता चला गया मुस्लिम शासन की स्थापना के बाद जब तुर्क शासको का आक्रमण राजपूत राज्यो पर होने लगा तो राजपूत रानियाँ व अन्य स्त्रियाँ अपने सतीत्व की रक्षा के लिए जौहर द्वारा प्राण त्याग देती थी।

दास प्रथा — भारतीय समाज मे दास प्रथा इस्लाम के प्रवेश से पहले से ही थी, परन्तु मुस्लिम शासन की स्थापना के बाद दास प्रथा अधिक विकसित हुई

स्त्री शिक्षा के विकास मे बाधा — स्त्रियो का कार्यक्षेत्र घर की चारदीवारी तक सीमित कर दिया गया जिससे उन्हे शिक्षा से वंचित रहना पड़ा।

वेशभूषा पर प्रभाव - मुसलमान पायजामा, शेरवानी अचकन तथा कुर्ता आदि पहनते थे मुसलमानो के सम्पर्क मे आने वाले भारतवासियो ने भी इस प्रकार की वेशभूषा को अपना लिया।

खान पान के क्षेत्र मे प्रभाव — मुस्लिम प्रभाव के कारण भारत मे बालूशाही कलाकंद गुलाब जामुन इमरती इत्यादी मिठाइयों का प्रचलन हुआ इसके अतिरिक्त भारतीयो मे मांस का सेवन करने की प्रवृत्ति बढ़ी।

Scanned by TapScanner

Umar

धार्मिक कट्टरता का जन्म – इस्लाम के आघातो से धर्म को बचाने के लिए रूढ़िवादिता तथा धार्मिक कट्टरता का जन्म हुआ अतः धार्मिक नियमो तथा रीति रिवाजो मे कठोरता लाने का प्रयास किया जाने लगा

एकेश्वरवादी भावना – इस्लाम की एकेश्वरवादी की भावना ने हिन्दु विचारको को भी प्रभावित किया।

मूर्ति पूजा मे अविश्वास – इस्लाम धर्म मूर्ति पूजा का कट्टर विरोधी है जब मुसलमान आक्रमणकारी भारत आए तो उन्होने हिन्दु देवी-देवताओ की मूर्तियो का खंडन करना शुरू कर दिया हिन्दुओ का मूर्ति पूजा से धीरे धीरे विश्वास उठने लगा।

भक्ति आंदोलन – यद्यपि भक्ति आंदोलन इस्लाम के प्रभाव के फलस्वरूप प्रारम्भ नही हुआ था परन्तु जबकि इस्लाम से प्रभावित अवश्य हुआ है। मुसलमानो शासको के अत्याचार से पीड़ित जनता मे निराशा की भावना उत्पन्न हो गई तथा उन्हे सर्वशक्तिमान ईश्वर की भक्ति मे ही अपनी सुरक्षा दिखाई देने लगा।

विभिन्न सुधार – इस्लाम के फलस्वरूप धार्मिक सुधारो का प्रादुर्भाव हुआ कबीर, नानक, दादू रैदास आदि सुधारको ने जाति तथा छुआछूत धार्मिक पाखंडो तथा बाह्य आडम्बरो का विरोध किया तथा शुद्ध आचरण ईश्वर की एकता हृदय की शुद्धता आदि पर बल दिया

आर्थिक क्षेत्र मे प्रभाव – भारत का प्रशांत महासागर और भूमध्य सागर के देशो तक फैलाया भारत मे वस्त्र, अनाज नील हाथीदांत का सामान अफीम आदि का आयात किया जाता था कृषि के साधनो मे पर्याप्त उन्नति के कारण उपज बढ़ गई।

शासन पर प्रभाव – इस्लाम के प्रभाव से भारत के छोटे छोटे राज्य शासन से एकसूत्र के अन्तर्गत आ गए।

कला क्षेत्र मे प्रभाव – मुगलकाल के हिन्दु राजाओ के महलो पर मुगल निर्माण शैली का बहुत प्रभाव पड़ा

साहित्य एंव भाषा पर प्रभाव – भारतीय भाषाओ पर भी फारसी, अरबी और तुर्की भाषाओ का प्रभाव पड़ा।

भारतीय युद्ध प्रणाली पर प्रभाव – हिन्दुओ ने मुसलमानो से तोपखाने तथा बारूद का प्रयोग सीखा।

Scanned by TapScanner

भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव —

संस्कृति किसी समाज मे गहराई तक व्याप्त गुणो के समग्र रूप का नाम है जो उस समाज की सोचने, विचारने, कार्य करने खाने-पीने बोलने नृत्य गायन साहित्य कला आदि मे परिलक्षित होती है। हमारे भारत देश की संस्कृति को भारतीय अथवा हिन्दू संस्कृति के नाम से जाना जाता है।

(1) पहनावा — सबसे पहले अगर हम पहनावे की बात करे तो जहाँ भारतीय संस्कृति का पहनावा धोती साड़ी कुर्ता पाजामा आदि है तो वही पाश्चात्य संस्कृति का पहनावा पैंट शर्ट स्कर्ट - टॉप आदि है जब अंग्रेज लोग भारत मे आते है तो यहाँ के पहनावे की ओर आकर्षित होते है जब कोई भारतीय विदेश जाता है तो वह भी वहाँ के पहनावे की ओर आकर्षित होता है लेकिन साथ साथ उस पहनावे को अपना लेता है

2 सामाजिक स्थिति — एक समय था जब हमारे युवाओ के आदर्श सिद्धान्त, विचार - चिन्तन और व्यवहार सकुल भारतीय संस्कृति के रंग मे रंगे हुए होते थे। वे स्वयं ही अपने संस्कृति के संरक्षक थे। परन्तु आज उपभोक्तावादी पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध से भ्रमित युवा वर्ग भारतीय संस्कृति के अनुगमन मे पिछड़ेपन का एहसास होने लगा है। जिस युवा ~~पीढ़ी पर~~ पीढ़ी के ऊपर देश के भविष्य की जिम्मेवारी है जिसकी ऊर्जा से रचनात्मक कार्य सृजन होना चाहिए उसकी पंसद मे नकारात्मक दृष्टिकोण हावी हो चुका है। संगीत हो या सौंदर्य प्रेरणा स्त्रोत की बात हो या राजनीति का क्षेत्र या फिर स्टेटस सिंबल की पहचान सभी क्षेत्रो मे युवाओ की पाश्चात्य संस्कृति मे ढली नकारात्मक सोच स्पष्ट परिलक्षित होने लगी है। आज जो भी संगीत बज रहा है वो पॉप संगीत है हमे सांस्कृतिक विरासत मे मिले शास्त्रीय संगीत व लोक संगीत के स्थान पर युवा पीढ़ी ने पॉप संगीत को स्थापित करने का फैसला किया है। उनका झुकाव पाश्चात्य संस्कृति की ओर ज्यादा है। आज लड़किया ऐसे पहनावा पहन रही है जो हमारे यहा अनुचित माना जाता है। आज युवा वर्ग अपने को पाश्चात्य संस्कृति मे ढालने मात्र को ही अपना विकास समझते है भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव लगातार बढ़ते जा रहा है।

From.
Dr. Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Shershah College
Sasaram

Date 25/4/2020